तटस्थ भाव से कह सकता हूं, क्योंकि यह घटना हमारे बीते युग की है। आज मैं मोहान्ध पति नहीं हूं। शिक्षक नहीं हूं। कस्तूरबाई चाहे तो मुझ धमका सकती है। आज हम परखे हुए मित्र हैं, कस्तूरबाई आज मेरी बीमारी में किसी बदले की ईच्छा रखे बिना मेरी चाकरी करने वाली सेविका है।'

गांधी जी को इस घटना के बाद बहुत प्रायश्चित हुआ। वे आंतरिक पीड़ा भी महसूस करने लगे। यह घटना 1898 की है। गांधी ने लिखा है, 'उन दिनों में यह मानकर चलता था कि पत्नी विषय-भोग का भाजन है, और पति की कैसी भी आज्ञा क्यों न हों' उसका पालन करने के लिए सिरजी गई है, लेकिन 1900 में मेरे विचारों में गंभीर परिवर्तन हुआ उसकी परिणति 1906 में हुई।

गांधी जी इस घटना का पुण्यस्मरण करते हुए यह भी लिखते है कि कस्तूरबाई के अपने कोई स्वतंत्र आदर्श हैं या नहीं, सो वह बेचारी खुद भी नहीं जानती होगी। संभव है कि मेरे बहुतेरे आचरण उसे आज अच्छे भी न लगते हों। इसके संबंध में हम कभी चर्चा नहीं करते, करने में कोई सार भी नहीं। उसे न तो माता-पिता ने शिक्षा दी और न जब समय था तब मैं दे सका। उसमें एक गुण बहुत बड़ी मात्रा में है, जो दूसरी बहुत सी हिन्दू स्त्रियों में न्यूनाधिक मात्रा में रहता है। इच्छा से, हो चाहे अनिच्छा से, ज्ञान से हो चाहे, अज्ञान से, उसने मेरे पीछे-पीछे चलने में अपने जीवन की सार्थकता समझी है और स्वच्छ जीवन बिताने में मेरे प्रयत्न में मुझे कभी नहीं रोका है। इस कारण यद्यपि हमारी बुद्धि-शक्ति में बहुत अन्तर है, फिर भी मैंने अनुभव किया कि हमारा जीवन संतोषी, सुखी और ऊर्ध्वगामी है।'

अपनी आत्मकथा में बापू ने कस्तूरबा की दृढ़ता के भी कई प्रसंग लिखे हैं। एक प्रसंग है डरबन में वह बहुत बीमार हो गई। डाक्टरों ने कस्तूरबा को मांस को शोरबा अथवा बीफ-टी, देने की जरूरत बताई। लेकिन न तो गांधी जी इसके पक्षधर थे न वे बिना बताए कस्तूरबा से ऐसा आग्रह कर सकते थे। वे दवा का दगा देकर भी ये वस्तुएं कस्तूरबा को नहीं देना चाहते थे। वे बहुत अशक्त हो गई थी। उन्होंने लिखा भी है कि उससे (कस्तूरबा) कुछ भी पूछना मेरे लिए दु:खदायी था। किन्तु धर्म समझ कर मैंने उसे थोड़े में ऊपर की बात बताई। उसने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया - 'मैं मांस का शोरबा नहीं लूंगी। मनुष्य की देह बार-बार नहीं मिलती। चाहे आपकी गोद में मर जाऊं, पर अपनी इस देह को भ्रष्ट तो नहीं होने दूंगी।' हालांकि डाक्टरों ने ऐसा न कराने पर मुझे निर्दय पति भी कहा लेकिन मैं उन्हें 'फीनिक्स' ले गया।' वहां केवल पानी के उपचार से ही धीरे-धीरे कस्तूरबाई का शरीर पुष्ट होने लगा।'

'स्वर सरिता' आपको नियमित भेजी जाती रही है, अब इसे निरन्तर संचालित करते रहने के लिए कृपया स्वयं प्रेरणा से सदस्यता शुल्क भिजवा कर सहयोग करें।

एक वर्ष का सदस्यता शुल्क : 600 छह वर्ष का सदस्यता शुल्क : 3000

- **चैक/डी.डी. -'वीणा प्रकाशन', जयपुर (VEENA PRAKASHAN, JAIPUR) के नाम निम्न पते पर भेजें या**
- **बैंक ऑफ बड़ौदा, जौहरी बाजार, जयपुर के अकाउंट नं. 01150200000933 में वीणा प्रकाशन के खाते में जमा करवाएं।**
- **बैंक की रसीद के साथ अपना पूरा पोस्टल एड्रेस, पिनकोड एवं फोन नम्बर हमें मेल करें।**

वीणा प्रकाशन

हल्दिया हाउस, जौहरी बाजार, जयपुर-302003 फोन - 0141-2572666, 4022623

Email-veenaprakashan@gmail.com website: veenaswarsarita.com